ओ३म्
राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 जून 2018
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, ११९
युगाब्द-५११९, अंक-१०१, वर्ष-११
ज्येष्ठ (द्वितीय), विक्रमी २०७५ (जून 2018)
मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

त्वं सोमासि सत्पतिस्त्वं राजोत वृत्रहा। त्वं भद्रो असि क्रतु:।। –ऋ० १। ६। १९। ५

व्याख्यान–हे सोमराजन्! सत्पते परमेश्वर! तुम (सोम:) सर्वसवनकर्त्ता–सब का सार निकालनेहारे, प्राप्यस्वरूप, शान्तात्मा हो। तथा [(सत्पति:)] सत्पुरुषों का प्रतिपालन करनेवाले हो। [(राजा)] तुम्हीं सब के राजा (उत) और (वृत्रहा) मेघ के रचक धारक और मारक हो। [(भद्र:)] भद्रस्वरूप, भद्र करनेवाले, और (क्रतु:) सब जगत् के कर्त्ता आप ही हो।।

सम्पादकीय

पलायन...?

यह सुनिश्चित सिद्धान्त है कि संसार परिवर्तनशील है, परिणाम स्वरूप मानव भी परिवर्तनशील एवं परिवर्तनप्रिय है और होना भी चाहिए। क्योंकि जीवन सुख प्राप्ति के लिए मिला है, अत: जहाँ जिस स्थिति में सुख प्राप्त हो सके उसके लिए प्रयत्न करना ही चाहिए। करोड़ों वर्षों की इस सृष्टि में मात्र सौ वर्ष का ही तो हमारा जीवनकाल है, इसमें भी कब, कहाँ किसकी मृत्यु किस कारणवश हो जाय कहना असम्भव है, ऐसी स्थिति में आशा के बल पर मानव अपने और अपने परिवारिक जीवन के सुख का ताना-बाना बुनता है। कुछ अपनी आकाक्षाएं होती हैं, कुछ माता-पिता की, कुछ सपने पत्नी के होते हैं तो कुछ चिन्ता पुत्र-पुत्रियों के उज्ज्वल भविष्य की। उन्हीं के निमित्त मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए गाँवों से उपनगरों (कस्बों) के लिए, उपनगरों से नगरों के लिए, नगरों से महानगरों के लिए, अपने राज्यों से दूसरे राज्यों के लिए और अपने देश की सीमाओं से विश्व के भिन्न-भिन्न देशों के लिए पलायन करता है। कभी सोचता है कि यहाँ सुरक्षा नहीं, वहां होगी। कभी सोचता है यहाँ सम्मान नहीं, वहाँ होगा। कभी सोचता है यहाँ धनार्जन नहीं, वहाँ होगा। कभी सोचता है, यहाँ शिक्षा व्यवस्था ठीक नहीं, वहाँ होगी। कभी विचारता है कि यहाँ स्वास्थ्य के अनुकुल वातावरण नहीं है, चिकित्सालय नहीं, चिकित्सक नहीं, वहाँ तो सब कुछ है। किन्तु क्या जिन-जिन उद्देश्यों, लक्ष्यों के लिए पलायन अथवा विस्थापित अथवा प्रवासी होता है, क्या वे उद्देश्य, वे लक्ष्य सभी को प्राप्त हो जाते हैं? गम्भीरतापूर्वक जब हम समाज में इसका अध्ययन करते हैं तो हमें पता चलता है कि परिणाम दोनों प्रकार के हैं- कुछ मानव सफल होते हैं, कुछ विफल। कभी-कभी ऐसा भी देखने में आता है कि कुछ लोग व्यर्थ की कल्पनाओं के जाल में फंसकर जहाँ कुछ वास्तविक सुख मिल रहा था उसे दु:ख समझकर अधिक सुख की लालसा में अपनी पैतृक सम्पदा को, विरासत को वीरान छोड़कर बहुतद ूर-दूरज ाप हुँचे,न यें सरेस ेंि तनका-तिनकास ंजोकरघ ार-परिवार बसाया। किन्तु बहुत थोड़े ही समय में पता लगा कि- यह हम क्या कर बैठे? इतो भ्रष्ट स्ततो भ्रष्ट:।

पाठकगणों! विचारिए! यदि देश के सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थित गाँवों से यह पलायन एक विवशता बन जाय? या यू कहें कि फैशन बन जाय तो क्या होगा? गांव यदि सीमावर्ती न हों और पूरे क्षेत्र के क्षेत्र खाली हो जाएं, दूसरी ओर शहरों में जनसंख्या का दबाव बढ़ता ही रहे तो शहर कितना जनभार समेट पांएगे? परिणाम स्वरूप वायु, जल, अन्नादि की व्यवस्था क्या समुचित प्रकार से चलती रह पायेगी? आदि-आदि अनेक प्रश्न हमारे सम्मुख हैं, जिन

शेष अगले पृष्ठ पर

संपादकीय का शेष...

पर हम सभी को विचार करना ही चाहिए! आइए कुछ तथ्य देखते हैं- उत्तराखण्ड (उत्तरांचल) जिसकी सीमाएं चीन और नेपाल से लगती हैं, इस राज्य की वर्तमान सरकार ने एक **'पलायन आयोग'** बनाकर राज्य के गाँवों से पलायन कर रहे लोगों का अध्ययन किया तो निम्नलिखित तथ्य सामने आये हैं

1) 4000 गाँवों से 1.19 लाख लोगों ने पलायन किया है। 2) चीन व नेपाल सीमा से लगे 14 गाँवों सहित राज्य में 734 गांव 2011 के बाद सूने हो चुके हैं। 3) गांवों के खाली होने की गति पिछले सात वर्षों में अधिक बढ़ी है। 4) गांवों से निकटवर्ती कस्बों में पलायन 19.46 प्रतिशत, अपने जनपद मुख्यालयों में पलायन 35.69 प्रतिशत, जिसमें देहरादून मुख्य है। सबसे चिन्तनीय है 28.72 प्रतिशत जनसंख्या का राज्य से दूसरे राज्य में पलायन, जिसमें सर्वाधिक दिल्ली में।

उत्तराखण्ड के उपरान्त बुन्देलखण्ड, महाराष्ट्र का मराठवाडा आदि क्षेत्र पलायन की दृष्टि से संवेदनशील स्थिति में दिखाई पड़ते हैं। बुन्देलखण्ड अर्थात् उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश सीमा पर बसे क्षेत्र की स्थिति कम भयावह नहीं है, कुछ उपलब्ध सरकारी तथ्यों के अनुसार म.प्र. के कुछ जिलों से लाखों लोगों ने 2015-16 में पलायन किया है- 1) छत्तरपुर 8 लाख लोग, 2) टीकमगढ़ से 5 लाख लोग, 3) सागर से 8.5 लाख लोग, 4) पन्ना से 2. 5 लाख, 5) दतिया से 3 लाख लोगों ने पलायन किया है। इसी प्रकार की स्थिति मराठवाडा आदि क्षेत्रों की है।

प्रश्न उठता है कि- पिछले अनेक वर्षोंसे अनेक चुनावों में नेता एक ही मुद्दा जनता के सामने रखते हैं कि **'हमारा मुद्दा विकास है'** आखिर यदि विकास हो रहा है, तो क्या बड़े-बड़े नगरों-शहरों का विकास ही विकास है? यदि नगर-शहर ही बढ़ते चले गये, जो कि कृत्रिम व्यवस्था पर जीते हैं, जहाँ न तो प्राकृतिक रूप से वायु शुद्ध है, न जल शुद्ध है, न अन्न शुद्ध है, न दुग्धादि पदार्थ, न फल-सब्जियां, यातायात की सुविधा दु:खदायी होती जा रही है। आखिर हम कौन से और कैसे विकास की ओर बढ़ रहे हैं या कि बढ़ाये जा रहे हैं? आर्य और आर्या होने के नाते हमें इन समस्याओं पर विचार करना होगा! क्योंकि यदि इसी प्रकार लोग इधर-उधर, दर-दर की ठोकरें खाते घूमते रहे, कभी सुरक्षा की चिन्ता में, कभी स्वास्थ्य की चिन्ता में, कभी वृति (आजीविका) की चिन्ता में, कभी शिक्षा व कभी सुविधा की चिन्ता में। तो फिर ऐसी परिस्थितियों में धर्म, राष्ट्र, सिद्धान्त, परम्पराएं, जीवनमूल्यों का क्या होगा? कौन इन्हें सीखेगा व कौन सीखना चाहेगा? फिर किसको सिखाएंगे?

भागते-फिरते लोगों के लिए धर्म, मानवता, परोपकार, समाजसेवा, राष्ट्रभक्ति यह सब व्यर्थ हो जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में तो आजीविका ही सबसे बड़ी समस्या बन जाती है। अत: हम सभी विचारें! पलायन को रोकने के उपाय खोजें, प्रचारित-प्रसारित करें। तभी मानवीय संवेदनाएं बच पायेंगी और उन्नति की ओर समाज बढ़ पायेगा।

विभिन्न स्थानों पर राष्ट्रीय आर्यछात्र सभा द्वारा आयोजित पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुलों की गतिविधियाँ

आर्यसद् जीन्द अधिवेशन

दिनांक 03/07/2018 (रविवार) करे जीन्द, रोहतक रोड़ स्थित विष्णु गार्डन में 'आर्यसद् जीन्द' का अधिवेशन आयोजित किया गया। आर्यसद् अधिवेशन की अध्यक्षता आर्यसद् जीन्द के प्रमुख आचार्य अशोक पाल जी ने की। अधिवेशन में जीन्द जनपद के लगभग 40 गाँवों के आर्यसदों ने भाग लिया। आर्यसद् अधिवेशन का प्रारम्भ यज्ञ एवं राष्ट्रीय प्रार्थना से किया गया। ईश्वर से स्वाधीनता, सुरक्षा, विद्या, स्वास्थ्य, परस्पर सामंजस्य की प्रार्थना की।

आर्यसद् अधिवेशन में विभिन्न सभाओं तथा राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा, राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा, राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा, राष्ट्रीय संरक्षणी सभा के पदाधिकारियों ने अपने पूर्व में किये गये आर्य प्रचार के कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। तदोपरान्त आगामी योजना का प्रस्ताव आर्यसद् के समक्ष रखा।

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा, जीन्द के अध्यक्ष मनजीत आर्य ने बताया कि 10 से 15 जून तक पंचदिवसीय छात्र गुरुकुल का आयोजन किया जायेगा एवं विभिन्न शिक्षण संस्थानों में छात्रों तक आर्य सिद्धान्तों को पहुँचाने के प्रकल्प को तीव्र किया जायेगा। आर्यसद् ने एकस्वर से छात्रसभा के प्रस्तावों पर स्वीकृति दी।

राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा के सचिव आर्य राजेश किनाना जी ने बताया कि क्षत्रिय सभा की 9 यूनिट खड़ी की जा चुकी हैं। अब उन्हें मजबूत करने का बीड़ा उठाया गया है, इस हेतु पिल्लुखेड़ा में आर्य रामकरण सिवाहा के मार्गदर्शन में शारीरिक प्रशिक्षण, क्षत्रिय अभ्यास चल रहा है एवं छात्र गुरुकुल में शारीरिक प्रशिक्षक राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा द्वारा भेजे जायेंगे।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के अध्यक्ष आर्य नरेन्द्र नरवाना ने बताया कि पिछले 10 मास में 12 सत्रों का आयोजन सभा के द्वारा किया गया है। ब्लाक स्तर पर राष्ट्रीय निर्मात्री सभा का गठन किया जा चुका है। आगामी सत्रों की जानकारी देते हुए 9-10 जून को उचाना ब्लाक के ग्राम मंगलपुर एवं पिल्लुखेड़ा ब्लाक के ग्राम बुढ़ाखेड़ा में 23-24 जून को होने वाले आर्य प्रशिक्षण सत्र की जानकारी दी गई।

राष्ट्रीय आर्य संरक्षणी सभा हरियाणा के सचिव आर्य रघुवीर सिंह ने कहा कि जीन्द में शीघ्र ही 'आर्य परिवार सम्मेलन' का आयोजन किया जाये। इस पर निर्णय लेते हुए 'आर्य परिवार सम्मेलन' के आयोजन का संकल्प लिया गया एवं इसका उत्तरदायित्व नवनियुक्त सचिव आर्य मुकेश गुलकनी को सौंपा गया।

आर्यसद् अधिवेशन में माता कृष्णा देवी, आर्य संदीप, सचिव आर्य जयदेव ने प्रेरणादायक गीतों से आर्यसदों को भावविभोर कर दिया।

आर्यसद् अधिवेशन के समापन पर आर्यसद् जीन्द के प्रमुख आचार्य अशोक पाल जी ने कहा- आर्यसद् प्रत्येक आर्य का संगठन है, यहाँ सभाओं से कार्य का लेखा-जोखा लिया जाता है। प्रत्येक चार मास में आयोजित होने वाले इस अधिवेशन में सब आर्यों को बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। इससे न केवल सभाओं के कार्यों की जानकारी ही मिलती है अपितु यह हमें आपने आर्यसद् होने के उत्तरदायित्व का अहसास भी करवाता है। प्रत्येक आर्यसद् का कर्तव्य कर्म है कि वह आपने ग्राम के आर्यकरण हेतु कोई कोर-कसर न छोड़े। सभाओं को सहयोग दें एवं सभाओं से सहयोग लें। बालकों को संस्कार देने के लिए राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा, युवकों के मार्गदर्शन हेतु राष्ट्रीय आर्य क्षत्रिय सभा, आर्यसमाजों की प्रतिस्थापना एवं संरक्षण हेतु राष्ट्रीय आर्य संरक्षणी सभा का सहयोग लेवें एवं आर्यकरण हेतु युवाओं-युवतियों को आर्य प्रशिक्षण सत्रों में भेजें। सभी सभाएं सामंजस्य से कार्य करती हैं तो शीघ्र ही जीन्द जनपद के सभी 306 गाँवों तक आर्य सिद्धान्तों की पहुँच होगी। अब हमें आर्य निर्माण से आर्यग्राम निर्माण की ओर बढ़ना होगा। इस हेतु **'संस्कार आपके द्वार'** अभियान को आर्यसद् जीन्द ने सर्वसम्मति से पारित किया। अभियान की रूपरेखा बनाने का उत्तरदायित्व आर्यसद् के नवनियुक्त सचिव आर्य जयदेव एवं सभी सभाओं के पदाधिकारियों को सौंपा गया। जय आर्य! जय आर्या! जय आर्यावर्त्त! के उद्घोष के साथ आर्यसद् जीन्द का तीसरा अधिवेशन समाप्त हुआ। समापन पर आर्यसदों के चेहरे पर उत्साह, प्रसन्नता, वीरता के भाव स्पष्ट झलक रहे थे। अधिवेशन में लगभग 65 महिलाओं और 145 पुरुषों ने भाग लिया।

-आर्य जयदेव (सचिव, आर्यसद्)

आर्यकरण–एक आह्वान

सृष्टि के आदि से लेकर आजतक सत्यज्ञान हमें ऋषियों के द्वारा मिलता रहा है। ज्ञान के वाहक ऋषिगण होते हैं। कर्तव्य–अकर्तव्य, पुण्य–पाप, धर्म–अधर्म, गुण–अवगुण, लाभ–हानि, सत्य–असत्य, हितकर–अहितकर, आस्तिक–नास्तिक आदि तथा ईश्वर का परिज्ञान हम मनुष्यों को ऋषि मुनि ही बतलाते हैं। ऋषिगण अपूर्व मेधा सम्पन्न, ईश्वर के संविधान के महाविद्वान, निस्वार्थी और परम दयालु होते हैं। इनका प्रत्येक उपदेश और कार्य प्राणिमात्र के हित के लिए होता है। वर्तमान कालीन देश–प्रान्त आदि की सीमाओं में इनका ज्ञान और कार्य बंधा हुआ नहीं होता है, परन्तु इस विश्व में मनुष्यमात्र के कल्याण और उन्नयन के लिए कर्म और उपदेश करते हैं, वास्तव में ये ऋषि–मुनि ही, मनुष्य ही नहीं अपितु प्राणिमात्र के सच्चे हितैषी होते हैं, इनका उपदेश हिन्दु, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, जैन, बौद्ध आदि–आदि विश्व भर में प्रचलित समस्त मत–पन्थों एवं सम्प्रदायों के अनुयायियों के लिए भी एक जैसा होता है, ये ही सच्चे अर्थों में मानवीय होते हैं। ऋषियों का ज्ञान सत्य, तथ्य, तर्क और यथार्थ वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित होता है। जिनके सिद्धान्तों को किसी भी काल (समय) में और किसी के भी द्वारा काटा–नकारा नहीं जा सकता है, इनका सिद्धान्त ईश्वरीय सिद्धान्तों एवं उनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान पर अवलम्बित है। सृष्टि के प्रारम्भ के ऋषियों से लेकर महाभारत कालीन ऋर्षियों तथा ऋषि व्यास, ऋषि जैमिनी, ऋषि पतन्जलि, ऋषि कणाद, ऋषि कपिल, ऋषि गौतम, ऋषि यास्क और पराधीनता के काल में ऋषि दयानन्द से हमें विश्व भर के मनुष्यमात्र के लिए करणीय और धारणीय ईश्वरीय ज्ञान मिला है।

ऋषियों में ऋषि दयानन्द हमारे सबसे निकट काल में हुए हैं, इसलिए प्राचीन सभी ऋषियों के ज्ञान और कर्म को ये अपने में समेटे हुये हैं और इनका उपदेश, कर्म और साहित्य विपुल रूप में हमारे सम्मुख है। जिससे हम सरलता और स्पष्टता से सत्य को जान सकते हैं, समझ सकते हैं, धारण कर सकते हैं और इस सत्य पथ पर चल सकते हैं। वैदिक सिद्धान्तों अर्थात् आर्ष सिद्धान्तों के परिज्ञान के लिए प्रमुख रूप से गुरुकुलीय विधा से विद्या ग्रहण और आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय आवश्यक है। वर्तमान काल में आर्य परम्पराओं के छिन्न–भिन्न हो जाने पर आर्य सिद्धान्तों में प्रमुख–प्रमुख सिद्धान्तों के परिज्ञान के लिए सर्वोत्तम, अल्पकालिक और संक्षिप्त विधा है आर्य प्रशिक्षण सत्र और और आर्या प्रशिक्षण सत्र जो कि **राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा** के द्वारा आयोजित होता है। वर्तमान में इसका कार्य क्षेत्र समस्त भारतवर्ष है व मुख्य रूप से सत्र हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड और राजस्थान प्रान्तों में आयोजित होते हैं। सत्य के जिज्ञासु, वेद के जिज्ञासु और मानवमात्र के हिताकांक्षी अवश्य इन सत्रों में सम्मिलित होकर सत्य ज्ञान ग्रहण करें, वर्तमान काल में जितना सैद्धान्तिक परिज्ञान आप दस वर्षों में भी स्वयं परिश्रम करके नहीं अर्जित कर सकते हैं, उससे अधिक और सुदृढ़ बोध आप इन द्विदिवसीय लघु गुरुकुलीय सत्रों में ग्रहण कर सकते हैं। इन द्विदिवसीय सत्रों के उपरान्त आपके लिए सत्य और वेद का द्वार खुल जाता है, आप वैदिक धर्म में प्रवेश पा लेते हैं और इससे आप ऋषियों के द्वारा रक्षित और सिंचित सत्य पथ के पथिक और वाहक बन जीवन के उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं।

अधिक जानकारी हेतु सभा की बेवसाईट–
www. aryanirmatrisabha.com पर व स्थानीय आर्य से सम्पर्क करें।

‘परम–धर्म’

–श्री मोहन लाल शास्त्री

॥ वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है॥

वेद को श्रुति कहा जाता है, क्योंकि वेदमन्त्र सुनकर ही स्मरण किए जाते हैं, बिना आचार्य के उद्धात्त–अनुदात्त–स्वरित स्वरों का ज्ञान होना सम्भव ही नहीं, इसका शिक्षण मात्र पुस्तकों से पढ़कर नहीं हो सकता।

वेद शब्दविद्या है, शब्द को अक्षर भी कहा है।

तमक्षरं ब्रह्म परम पवित्रं गुहाशयं सम्यगुशन्ति विप्रा।
स श्रेयसा चाभ्युदयेन चैव, सम्यक प्रयुक्तः पुरुषं युनक्ति॥

(सूत्रात्मक–पाणिनीय शिक्षा)

विद्वान् लोग, उस आकाश वायु प्रतिपादित, अविनाशी विद्या, सुशिक्षा सहित बुद्धि में स्थित, अत्युत्तम शुद्ध शब्द राशि की अच्छी प्रकार प्राप्ति की कामना करते हैं, और वह अच्छी प्रकार प्रयोग किया हुआ शब्द शरीर, मन, आत्मा और सम्बन्धियों के लिए इस संसार के सब सुख से मनुष्य को सम्बद्ध कर देता है। **(एकः शब्दः सम्यक् प्रयोगे सुष्ठु ज्ञाते स्वर्गे लोके च कामधुक् भवति।)**

ऐसी महितामयी शब्द–विद्या वेद है, इसीलिए महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने वेद पढ़ना–पढ़ाना, सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म कहा है, सब, कहने का तात्पर्य आचरण युक्त आर्य तथा परम्परागत नाम–मात्र के माने–जाने वाले आर्यों से भी है, फिर परमधर्म अर्थात् आत्यन्तिक कर्त्तव्य है।

इसलिए आर्यों को इस धर्म का पालन आवश्यक है, किन्तु चिर अतीत से इस देशवासियों की आदत ही बन गई है, सिद्धान्त को जानना, समीक्षा करना परन्तु कार्य रूप में परिणित न कर सकना।

अतः अब आर्यों को इस आदत को छोड़कर परमधर्म को पालन करने का सत्प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए कुछ सुझाव इस प्रकार हैं–जब भी कोई सम्मेलन, उत्सव, महापुरुषों की जयन्ति या निर्वाण दिवस (बलिदान दिवस) के समारोह हों तो उनमें वेद–पाठ का कम से कम 15–20 मिनट का समय निर्धारित किया जाय। बहुत से कार्यक्रमों को देखने–सुनने से ज्ञात हुआ कि गुरुकुल के छात्र अधिकतर कार्यक्रमों में सम्मिलित होते हैं, इसलिए छात्रों से सस्वर वेद–पाठ कराया जा सकता है। दो–दो मन्त्र सभी वेदों के उनके भावार्थ सहित पाठ हों तो वक्ता–श्रोता सबका कल्याण सम्भव है।

इस प्रक्रिया से छात्रों को मन्त्रों के भावार्थ व्यक्त करने का अवसर मिलेगा, सभा में बोलने का अभ्यास होगा तथा गुरुकुल का परिचय भी जनसामान्य को होगा।

आर्य समाज का तीसरा नियम, कार्यरूप में परिणित होकर समाज के हित साधन का कारक बनेगा।

धर्म के लक्षणों का व्यवहारिक स्वरूप

-आचार्य संजीव, मुजफ्फरनगर

धैर्य- सुख, हानि-लाभ में धैर्य को न छोड़ना किंतु धैर्य से ही धर्म में स्थिर रहना। जो कहते हैं कि यदि जनता अत्याचारों से त्रस्त होकर सड़कों पर उतर आती है, धैर्य छोड़ देती है तो क्या वह अधर्मी है? इसका उत्तर कुछ दूसरी प्रकार ढूंढो- यदि वह सड़कों पर उतर कर धैर्य रखें, शान्तिपूर्वक आंदोलन करें, धरना प्रदर्शन करें तब तो ठीक और यदि धैर्य खोकर तोड़फोड़ पर उतर आएं, कानून तोड़ें तो निश्चित ही अधर्म है और डॉ. आंबेडकर का संविधान भी इसी का अनुमोदन करता है।

क्षमा- निन्दा-स्तुति, मान-अपमान का सहन करके धर्म ही का आचरण करना। यहां ध्यान रखना चाहिए कि आप कहते हैं कि अपराधियों को क्षमा कर देना चाहिए, तो यहां अपराधियों को क्षमा करने के लिए नहीं कहा किंतु यदि क्षमा न हो तो शांति रहना असंभव है, तब छोटी-छोटी बातों पर व्यक्ति हिसंक हो उठेंगे और उत्पात मचायेंगे। जैसा आजकल बहुधा देखने में आने लगा है, छोटी-छोटी सी बातों पर दंगे फसाद, हत्या तक कर देने से भी व्यक्ति नहीं रुकता है।

दम- मन को अधर्म से हटाकर धर्म ही में प्रवृत्त रखना। आप कहते हो मन को कोई जीत नहीं पाया तो हम भी कब कह रहे हैं मन को जीत लेंगे। यहाँ सीधा अर्थ है कि मन धर्म-अधर्म में आता जाता है पुन: उसे अधर्म से रोक कर धर्म में प्रवृत्त रखना, अन्याय से रोककर न्याय में प्रवृत्त रखना, यही धर्म है यही दम है।

अस्तेय- मन, कर्म, वचन से अन्याय और अधर्म से पराए द्रव्य का स्वीकार न करना। इससे समाज में चोरी, ठगी आदि अपराध अत्यन्त न्यून होंगे।

शौच- राग-द्वेष आदि त्याग कर आत्मा और मन को पवित्र रखना, जल आदि से शरीर को शुद्ध रखना। यह इसलिए धर्म का लक्षण है क्योंकि जब व्यक्ति राग-द्वेष आदि से पीड़ित रहता है तब वह दूसरों के सत्य को भी असत्य सिद्ध करता है, ठीक को भी गलत सिद्ध करता है, वह सत्यासत्य और ठीक गलत का अंतर अपने राग-द्वेष से करता है, निष्पक्ष होकर नहीं। और स्वच्छता जो बाह्य है वह इसलिए धर्म है क्योंकि इससे उसका स्वास्थ्य ठीक रहेगा और यह सामाजिक स्वभाव हो जाने पर सबके लिए लाभकारी है।

इन्द्रियनिग्रह- इन्द्रियनिग्रह का तात्पर्य श्रोत्र आदि इन्द्रियों को अधर्म से हटाकर धर्म में चलाना। इसलिए धर्म का लक्षण है क्योंकि व्यक्ति जैसे आचरण में रहता है वैसा ही करता है। यथा कोई व्यक्ति ताश खेलने वालों को देखने लगे तो उसे उसमें आनंद आने लगेगा और धीरे-धीरे वह खेलना आरंभ कर देगा। इसलिए पहले ही उससे बचकर रहना ऐसे स्थानों पर जाना ही नहीं, इनमें रमण करना ही नहीं।

धी- बुद्धि को बढ़ाते रहना, सीधा कहें तो व्यक्ति सतर्क रहें, सावधान रहें, अवधानता में बने रहने का नाम बुद्धि है, जिससे व्यक्ति दुष्कर्मों से, उल्लघंन से बचता है।

विद्या- जिससे पृथ्वी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त यथार्थ बोध होता हो उस विज्ञान आदि विद्या को प्राप्त करना।

सत्य- सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना यह इसलिए धर्म है क्योंकि व्यक्ति जानते हुए भी कहता नहीं, वह अपने स्वार्थ के कारण से असत्य पर झुक जाता है। वह अविद्या के कारण से असत्य पर झुक जाता है जैसे वर्तमान में इस्लाम के नाम पर बढ़ते हुए आतंकवाद आदि खतरों को सभी जानते हैं, देखते हैं किन्तु फिर भी सत्य कहने से बचते हैं। नेता तो कदापि स्वीकार ही नहीं करते, अकेले में मान लेंगे लेकिन सार्वजनिक रूप से कभी नहीं मानेंगे, जनता को स्पष्ट संदेश नहीं देंगे। रही बात आपके संशय की- सत्य कहने से पूर्व जांचना अवश्य चाहिए, हाँ असत्य बोलना कमजोरी हो सकती है, विवशता हो सकती है, धर्म नहीं और अतत: ऐसी घटनाओं का सहारा लेकर असत्य का पक्ष लेना भी उचित नहीं।

अक्रोध- अक्रोध इसलिए धर्म है क्योंकि जब व्यक्ति क्रोध में रहता है तब बुद्धि काम नहीं करती है, क्रोधी व्यक्ति बदला लेने पर उतारू रहता है वह अधिकारपूर्वक कर्तव्य नहीं कर पाता है। रामचन्द्र जी आदि का क्रोध बदले का नहीं विवशता में दण्ड देने के लिए हथियार उठाने का है।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा आयोजित दो दिवसीय सत्रों व सभा से सम्बन्धित नवीन जानकारी सभा की बेवसाईट-

www.aryanirmatrisabha.com

पर उपलब्ध है। अत: आप वहाँ से जानकारी ले सकते हैं। यह पत्रिका भी प्रत्येक मास दिनांक 10 को सभा की बेवसाईट पर डाल दी जाती है अत: पत्रिका को पढ़ने के लिए साईट के लिंक **www.aryanirmatrisabha.com/पत्रिका** पर जाएं।

29 जुन-27 जुलाई 2018 आषाढ़ ऋतु- वर्षा

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
				पूर्वाषाढ़ा कृष्ण प्रतिपदा 29 जून	उत्तराषाढ़ा कृष्ण द्वितीया 30 जून	श्रवण कृष्ण तृतीया 1 जुलाई
धनिष्ठा कृष्ण चतुर्थी 2 जुलाई	शतभिषा कृष्ण पंचमी 3 जुलाई	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण षष्ठी 4 जुलाई	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण सप्तमी 4 जुलाई	उत्तराभाद्रपदा कृष्ण अष्टमी 6 जुलाई	रेवती कृष्ण नवमी 7 जुलाई	अश्विनी कृष्ण दशमी 8 जुलाई
भरणी कृष्ण एकादशी 9 जुलाई	रोहिणी कृष्ण द्वादशी 10 जुलाई	मृगशिरा कृष्ण त्रयोदशी 11 जुलाई	आर्द्रा कृष्ण चतुर्दशी 12 जुलाई	पुनर्वसु कृष्ण अमावस्या/प्रतिपदा 13 जुलाई	पुष्य शुक्ल द्वितीया 14 जुलाई	आश्लेषा शुक्ल तृतीया 15 जुलाई
मघा शुक्ल चतुर्थी 16 जुलाई	पू॰ फाल्गुनी शुक्ल पंचमी 17 जुलाई	उ॰ फाल्गुनी शुक्ल षष्ठी 18 जुलाई	हस्त शुक्ल सप्तमी 19 जुलाई	चित्रा शुक्ल अष्टमी 20 जुलाई	स्वाती शुक्ल नवमी 21 जुलाई	विशाखा शुक्ल दशमी 22 जुलाई
अनुराधा शुक्ल एकादशी 23 जुलाई	ज्येष्ठा शुक्ल द्वादशी 24 जुलाई	मूल शुक्ल त्रयोदशी 25 जुलाई	पूर्वाषाढ़ा शुक्ल चतुर्दशी 26 जुलाई	उत्तराषाढ़ा शुक्ल पूर्णिमा 27 जुलाई		

क्रान्तिकारी आर्य युवक श्री लक्ष्मण जी का निधन

श्री लक्ष्मण आर्य

गुजरात की भूमि पर दो दिवसीय आर्य निर्माण रूपी आन्दोलन का बीजारोपण करने वाले श्री लक्ष्मण आर्य का गत 31 मई को एक सड़क दुर्घटना में देहांत हो गया। अहर्निश आर्यावर्त का स्वपन्न संजोने वाले आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता आगामी सत्र की रूप-रेखा तैयार करने अपने किसी मित्र के यहाँ जा रहे थे कि अँधेरे के कारण सड़क पर खड़ी एक ट्रैक्टर ट्राली से उनकी बाईक टकरा गई। इस प्रकार की घटनाओं से हम सभी को सावधान रहने की आवश्यकता है।

श्री लक्ष्मण आर्य जी का जन्म गुजरात के ग्राम अनोर में एक अत्यन्त रूढिवादी, मूर्तिपूजक एवं बलिप्रथा का समर्थन करने वाले बहुत ही गरीब परिवार में हुआ। उस क्षेत्र में आज भी लोग मंदिरों में निरीह पशुओं की बलि देकर अपने आपको धन्य मानते हैं। सामान्य गति से चल रहे जीवन में एक दम से परिवर्तन तब आया जब किसी मित्र के कहने पर आर्यसमाज भरूच के सम्पर्क में आए और नाथू काका के कहने पर सत्यार्थ प्रकाश का स्वध्याय किया। इस क्रान्तिकारी पुस्तक ने उनको अन्दर तक झंकझोर कर रख दिया। उनके शरीर में जैसे नए रक्त का संचार हुआ। उनका जीवन यज्ञमय हो गया। घर में रखी तमाम मूर्तियों को बाहर का रास्ता दिखला दिया। घर, परिवार और समाज के लोगों के बीच आर्य सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार करते किन्तु लम्बे समय से पाखण्ड की बेड़ियों में जकड़े समाज को आर्य समाज के सिद्धान्त कहाँ रास आते हैं।

आर्य विचारधारा पर अग्रसर होने के कारण ससुराल पक्ष ने उनसे किनारा कर लिया। पत्नी भी पितृपक्ष के दवाब के कारण अपने मायके रहने लगी। समाज के लोगों से उन्हें प्रायः दो-चार होना पड़ता। किन्तु उन्होंने हार नहीं मानी। आर्यसमाज के प्रचार के लिए वे सदैव डटकर तैयार रहते किन्तु उन्हें प्रचार के उस मार्ग की तलाश थी जिससे कम समय में सरलतापूर्वक युक्ति संगत व्यापक रूप से सफलता मिल सके।

घृत से सने जीवन रूपी सामग्री में चिंगारी का काम दिसम्बर 2012 में हरियाणा के जनपद गुरुग्राम के अन्तर्गत सोहना में आयोजित दो दिवसीय निर्माण सत्र ने किया। सत्र समापन के बाद वो बच्चे की भांति रोने लगे और कहने लगे मैं आज वास्तव में ऋषि दयानन्द के उपकारों को जान पाया हूँ, अब घर नहीं जाऊँगा अपितु बाहर रहकर ही आर्यसमाज के प्रचार के लिए अपना पूरा जीवन ही दान कर रहा हूँ। बारम्बार समझाने पर भी लक्ष्मण जी घर तो चले गए किन्तु वास्तव में ही उन्होंने आर्य सिद्धान्तों के प्रचार के लिए अपना जीवन अर्पण कर दिया। अब उन्हें आर्य करण की राह मिल गई थी। धीरे-धीरे परिस्थितियाँ बदलने लगी। परिवार पुनः संभल गया। मित्रों के साथ मिलकर टीम का गठन किया। जून 2013 में गुजरात के भरूच में आर्य निर्माण का पहला सत्र लगा। जिसके कर्ता-धर्ता श्री लक्ष्मण आर्य जी ही थे। बाद में आनन्द वाले श्री प्रवीन आर्य जी के साथ मिलकर आनन्द के आस-पास के क्षेत्रों में आर्य निर्माण के सत्रों का आयोजन किया। सत्र कहीं पर भी लगे वे मित्रों को तैयार कर वही पहुँच जाते। किन्तु समय बीतते-बीतते उन्हें कई कठिनाईयों से दो-चार होना पड़ा। श्री लक्ष्मण जी के असामयिक निधन से आर्यसमाज को बड़ी हानि हुई है जिसकी क्षतिपूर्ति करना सम्भव नहीं है। आज भले ही श्री लक्ष्मण जी हमारे बीच में नहीं है। किन्तु उनका जीवन निरन्तर आर्य निर्माण के कार्य की प्रेरणा देता रहेगा, चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी क्यों न हों हमें आर्य निर्माण के इस पुनीत कार्य में अहर्निश लगे रहना चाहिए क्योंकि आर्य निर्माण ही राष्ट्र निर्माण है। मृत्योपरान्त उनके परिवार को सम्भालने की जिम्मेदारी वहाँ के स्थानीय आर्यगणों एवं सभा ने ले ली है।

– आर्य सुनील, सोहना, गुरुग्राम।

Rishi Dayanand - His Life And Work

-Saroj Arya, Delhi

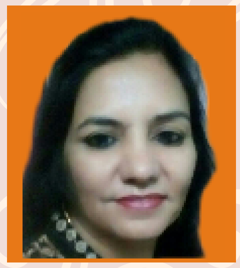

Nothing more was needed to damn Haldar. But to add to his failure, many worshiper of idols threw their idols in the bazaar or into the river and testified thereby to the truth of Swamiji's doctrines.From Kanpur Swamiji proceded to Banaras, the great centre of Sanskrit learning and the citadel of orthodoxy. Dayanand felt that his work was not complete unless he dealt a blow to this city of myth and marvel. Equipped with naught, but his learning and his character, this solitary monk was thinking of assaulting this power Maharaja himself to guard its idolatrous beliefs and its iniquitous trade, But nothing could daunt our hero, he took his stand on the solid rock of truth and no fear of worldly opposition or power could deter him from doing what he considered to be right. He dared to believe and to act.

The fame of this 'iconoclast' had preceded him, his discussions at Frrukhabad and Kanpur had made him known in all seats of orthodoxy in India-particularly Banras. His arrival caused anxiety among the pundits. Many a person gathered to the place where he was staying, some out of curiosity, some to spite him and thus to feed their hate, others to listen to his arguments. such was the effect if his eloquence that many 'who came to scoff remained to pray.' Swamiji, who was anxious to bring matters to a head, one day wrote down a question in connection with a subject, dealt with in the Mahabhashya and sent the slip to the well-known pandit of Banaras-Raja Ram Shastri. The reply of the pundit was "let the knife be placed between us, if I satisfy you, I will cut off your nose, if not, you may cut off mine." When this answer reached Swamiji, he laughed and said, "Two knives instead of one, if that be your wish. Let shastras (weapons) serve as substitutes for shaastras (scriptures) if these suit you better."

Swamiji's fearless denunciation of idol-worship aroused the Maharaja of Kashi to his duties as 'Defender of the Faith,' and he called the pandits of Kashi together and impressed upon them the necessity of holding a shastrartha (discussion with proof of scriptures only), lest the unorthodox ideas perished by Dayanand should take root in the minds of the people. Monday, November 16, 1869 was fixed by mutual consent as the date of the shastrartha. The pandits started mighty preparations to meet their formidable opponent, not only by way of collection of arguments to support their cause but at the same time by rousing the rowdy element of the town to their duty at the hour of need. Victory must be attained, by fair means or foul. And what fear they when the Maharaja was there to back them up ? It was a tremendous gathering that came to hear the discussion. Swamiji was told by some of his well-wishers that they apprehended foul play, for a larger number of hooligans had found their way to the place reserved for speakers, in spite of the orders of the Kotwali the contrary. "I am prepared to risk my life rather than be false to God. I have nothing to fear, for I live for my Ishwara and my Dharma," replied Swamiji, and he repaired to the meeting, as calm as ever. In order to overawe him, it had been arranged that the pundits who were to participate in the discussion should come in a victorious procession, and as soon as they entered, there were loud shouts of joy. The Maharaja of Kashi, who to preside, soon followed. The pundits rose and gave him their blessing. From start Swamiji felt that proper treatment was not being given to his supporters so much so that they were not allowed to sit by him. But he did not protest and allowed the Maharaja and the pundits to please themselves. He inquired if the Vedas had been brought, and was told that since the pundits knew the Vedas by heart it was felt unnecessary to bring them.

To be continued...

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

काफी कुछ सीखने को मिला। आर्यसमाज से बचपन से जुड़े हुए हैं। पिताजी रामपुरा आर्यसमाज कोटा के मन्त्री भी रह चुके हैं। इसीलिए आर्य परिवार से हैं। पिता जी से और दयानन्द जी से प्रेरित होकर 2010-11 में गुरु विरजानन्द पब्लिक स्कूल की स्थापना की।

सत्र में आने से काफी कुछ सीखने को, समझने को मिला। जो अधूरा ज्ञान था वो कुछ हद तक पूर्ण भी हुआ है। विद्यालय एक अच्छा स्थान मिला हुआ है, जहाँ पर हम इस सत्र के अनुभव में जो सीखा है वो हम बच्चों को सिखा भी सकते हैं। मैं पूरी कोशिश करूंगा कि इस कार्य के लिए मैं जितना सहयोग दे पाऊँ वो दूँ। विद्यार्थियों को आर्य बनाने की पूर्ण कोशिश विद्यालय में करूंगा।

नामः विनोद सिंह आर्य, आयुः 29 वर्ष, योग्यताः एम.ए., पताः बसन्त विहार, कोटा, राजस्थान।

मुझे यहाँ आकर ईश्वर का सही-सही रूप, गुण, कर्म का पता चला है। पहले ईश्वर को लेकर बहुत भ्रान्तियाँ थी, लेकिन अब कोई भ्रान्तियाँ नहीं बची।

राष्ट्र के बारे में वर्तमान परिस्थितियों का पता चला और उसका समाधान भी पता चला। अब मेरे जीवन को एक सर्वोत्तम लक्ष्य मिल गया है, जो है-आर्य निर्माण।

नामः जलदीप, आयुः 24 वर्ष, योग्यताः 12वीं, पताः बादली, झज्जर, हरियाणा।

सत्र से पहले मुझे अपने अतीत की आधी-अधूरी जानकारी थी एवं जीवन के सिद्धान्तों की जानकारी का अभाव था। लेकिन सत्र में प्रशिक्षण के दौरान बहुत सारी भ्रान्तियों का निवारण हुआ है। लेकिन अभी यह शुरुआत है। आशा है आगामी सत्रों में और भी सीखने को मिलेगा।

सभा द्वारा जो भी कार्य-भार मेरे सामने रखा जाएगा मैं अपने सामर्थ्य अनुसार करने की कोशिश करुँगा।

नामः सुरेश कुमार, आयुः 41वर्ष, योग्यताः बी.ए., पताः ढिंगसरा, फतेहाबाद, हरियाणा।

इस दो दिनों के सत्र का अनुभव रहा, इससे पहले मैंने इस तरह का सेमिनार नहीं किया था। अपने पूर्वजों के आर्य सिद्धान्तों का कुछ ज्ञान प्राप्त किया। लेकिन इन दो दिनों में जो सीखने को मिला, उससे कुछ भ्रान्तियां थी वो दूर हुई। अब मैं इन सिद्धान्तों का प्रचार करूंगा। पहले सुना था कि आर्य नास्तिक होते हैं, लेकिन मैं नहीं मानता था। अब सिद्ध किया गया कि आर्य आस्तिक हैं, ये आडम्बरों में विश्वास नहीं करते। सब कुछ ज्ञानवर्धक व एक अच्छा श्रेष्ठ मनुष्य बनने में आर्यसमाज के सिद्धान्त अति उत्तम सिद्ध होते हैं, यह मैंने माना है।

नामः पवन कुमार, आयुः 45 वर्ष, योग्यताः एम.ए., बी.एड., पताः कैरावाली, सिरसा, हरियाणा।

छात्र गुरुकुल

राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा हरियाणा प्रान्त में 10 स्थानों पर जून मास में पञ्चदिवसीय छात्र गुरुकुल लगा रही है, इस गुरुकुल में छात्रों को शारीरिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक विकास हेतु प्रशिक्षण दिया जायेगा। जिससे छात्रों का एक योग्य नागरिक के रूप में विकास हो सके। यदि आप चाहते हैं कि हमारे बालक देश-धर्म को जानें तो इस पञ्चदिवसीय गुरुकुल में अवश्य भेजें। इसमें कक्षा 5 से कक्षा 10 तक के छात्र भाग ले सकते हैं। प्रत्येक स्थान पर अधिकतम 100 छात्रों को लिया जाएगा। अतः आप सब से निवेदन है कि अतिशीघ्र पंजीकरण करवा लें। अन्य किसी जानकारी हेतु सम्पर्क करें- अमनदीप आर्य, प्रान्तीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय आर्य छात्र सभा, हरियाणा -7876854056, 7015749403

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	13 जून	दिन-बुधवार	मास-ज्येष्ठ-द्वितीय	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-रोहिणी
पूर्णिमा	28 जून	दिन-गुरुवार	मास-ज्येष्ठ-द्वितीय	ऋतु-ग्रीष्म	नक्षत्र-मूल
अमावस्या	13 जुलाई	दिन-शुक्रवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-पुनर्वसु
पूर्णिमा	27 जुलाई	दिन-शुक्रवार	मास-आषाढ़	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-उत्तराषाढ़ा

संध्या काल

ज्येष्ठ-द्वितीय मास, ग्रीष्म ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(30 मई 2019 से 28 जून 2019)
प्रातः कालः 5 बजकर 15 मिनट से **(5.15 A.M.)**
सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से **(7.15 P.M.)**

आषाढ़- मास, वर्षा ऋतु, कलि-5119, वि. 2075
(29 जून 2018 से 27 जुलाई 2018)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से **(5.30 A.M.)**
सांय कालः 7 बजकर 15 मिनट से **(7.15 P.M.)**

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।